रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड १७: प्रवास (क़ियाम)

'प्रवास', 'क़ियाम', यह बारह साल की लंबी उदासी के बाद परोपकारी मुसाफ़िर की पांच नदियों की भूमि पर घर वापसी है, जहां से जल्दी ही अगली उदासी शुरू होती है। यह उन संतों की यादों को ताज़ा करता है जिनके रूहानी अमल गुरु नानक के साथ मेल खाते हैं।

जेही रुत काइआ सुख तेहा तेहो जेही देही ॥
नानक रुत सुहावी साई बिन नावै रुत केही ॥
(राग मलार, गुरु नानक)

जिस तरह की ज़िंदगी की ऋतु है
उसी तरह काया की स्थिति है।
हे नानक! वह मौसम सुहावना है
जब इंसान आत्म-पड़चोल करता है।
यदि मनुष्य अपने भीतर ना देखे
तो वह कैसी ऋतु होगी?
(राग मलार, गुरु नानक)

जैसे धरती का सूर्य के चारों ओर घूमने से मौसम बदल जाता है, वैसे ही हालात मनुष्य के मिज़ाज पर भी असरअंदाज़ होते हैं। गुरु नानक ने फ़रमाया कि हालात से सीखकर की गई आत्म-पड़चोल से हम लाभ उठा सकते हैं।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने चित्तौड़गढ़ से उत्तर की ओर सफ़र शुरू किया और अजमेर, पुष्कर, मथुरा, दिल्ली, पानीपत, तख़तूपुरा, सुल्तानपुर लोधी, पट्टी, घविंडी, जाहमन, डेरा चाहल होते हुये ननकाना साहिब पहुंचे। सबसे पहले उन्होंने चित्तौड़गढ़ से अजमेर का सफ़र किया।

गुरु नानक के पद्चिन्हों पर चलते हुये अब हम चित्तौड़गढ़ से अजमेर जा रहे हैं।

मुझे हज़रत ख्वाज़ा के साथ धमाल खेलना है।

अजमेर शहर इंडिया के राजस्थान राज्य में अनासागर झील के आसपास आबाद है।

अमरदीप सिंह: अरावली पहाड़ियों में आबाद शहर अजमेर को ख्वाज़ा मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह के लिये जाना जाता है और इसे पुष्कर का प्रवेश द्वार माना जाता है।

मुझे हज़रत ख्वाज़ा के साथ धमाल खेलना हैं।

हम ख्वाज़ा मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह पर जा रहे हैं जो तारागढ़ पहाड़ी की तलहटी में है।

मुझे हज़रत ख्वाज़ा के साथ धमाल खेलना हैं।

ख्वाज़ा मुइनुद्दीन चिश्ती का जन्म बारहवीं शताब्दी में ईरान के सिस्तान में हुआ था, लेकिन इन सूफ़ी संत ने अजमेर में ठिकाना बनाया। उन्हें चिश्ती सिलसिले को इंडिया से परिचित करवाने का सौभाग्य हासिल है।

बाईस ख्वाजा मिल बन बन आये।

'चिश्ती' सिलसिले के सोच में 'सामा' महत्वपूर्ण है जिसमें कव्वाली गायन के माध्यम से ख़ुदाई को हाज़िर होने के लिये पुकारा जाता है।

(कव्वाली)

गुरु नानक ने पाकपट्टन निवासी बाबा शेख फ़रीद शकरगंज की बाणी का संग्रह किया, जिसे बाद में गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल किया गया। ख्वाज़ा मुइनुद्दीन चिश्ती के नामवर शिष्यों में बाबा फ़रीद थे। बाबा फ़रीद ने काफी समय तक इस दरगाह में हाज़री भरी। उनकी यादगार यहां बनी हुई है।

इस दरगाह में गुरु नानक की मुलाकात ख्वाज़ा मुइनुद्दीन चिश्ती के चेलों, अलाउद्दीन और सगरासुद्दीन से हुई। उन्होंने रोज़ाना की लाज़मी पांच नमाज़ों में क़ाज़ी की ज़िम्मेदारी के बारे में गोष्टी की। गुरु नानक ने गाया,

सोई काजी जिन आप तजिआ इक नाम कीआ आधारो ॥
है भी होसी जाइ न जासी सचा सिरजणहारो ॥३॥
पंज वखत निवाज गुजारहि पड़हि कतेब कुराणा ॥
नानक आखै गोर सदेई रहिओ पीणा खाणा ॥
(सिरी राग, गुरु नानक)

वह मनुष्य काज़ी हो सकता है जो अहंकार से छुटकारा पा ले और वहदत के नियम के अनुसार ज़िंदगी वसर करे।
वह था, वह है और वह हमेशा रहेगा। वह ना पैदा होता है और ना ही मरता है वह सच्चा सृजनहार।
कोई पांच नवाज़ें पढ़े या कुरान पढ़े।
नानक ने फ़रमाया कि जब कब्र का बुलावा आयेगा तो खाना-पीना ख़त्म हो जायेगा।
(सिरी राग, गुरु नानक)

इबादत का मकसद तो मन को दुनियादारी के कामों से परे, आगे का इरादा करने के लिये प्रेरित करना है। गुरु नानक ने फ़रमाया कि लिंग, मज़हब और रुतबे की तरफ़दारी से ऊपर उठें क्योंकि
वहदत के बड़े मकसद के बिना दस्तूर के मुताबक किया जाप व्यर्थ है।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने अजमेर से अरावली पहाड़ियों को पार किया और नज़दीकी शहर पुष्कर का सफ़र किया।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर अब हम पुष्कर जा रहे हैं जिस को हिन्दू समाज में 'तीर्थ-राज' का रुतबा हासिल है।

अमरदीप सिंह: पुष्कर शब्द का अर्थ 'कमल का फूल' है जिसे ब्रह्मा का आसन माना जाता है। हिंदू मज़हब की त्रिमूर्ति में ब्रह्मा की इबादत कायनात के सृजनहारे के तौर पर होती है।

प्रसिद्ध पुष्कर झील के नज़दीक बावन घाट और कई मंदिर हैं। इनमे से एक घाट दसवें गुरु नानक, गुरु गोबिंद सिंह को समर्पित है।

पुष्कर झील के नज़दीक जगतपिता ब्रह्मा मंदिर है। कहा जाता है कि यह हिंदू मज़हब की त्रिमूर्ति में कायनात के सृजनहारे के तौर पर शामिल भगवान ब्रह्मा को समर्पित किया हुआ एकमात्र मंदिर है।

हम अब पुष्कर गुरुद्वारे जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: यह गुरुद्वारा गुरु नानक के मंदिरों के शहर में आने की याद में बना हुआ है।

पुष्कर सिर्फ़ तीर्थ स्थान के तौर पर प्रसिद्ध नहीं है बल्कि यहां इंडिया का सबसे बड़ा ऊठों और पशुओं का मेला लगता है जिसे 'कार्तिक मेला' कहा जाता है। मेला तीर्थ यात्रियों और व्यापारियों के अलावा पर्यटकों को भी आकर्षित करता है।

'स्वप्न' एक गहरी नींद की अवस्था है लेकिन चेतना हमेशा सतर्क रहती है। लोगों को बेशुमार कामों में लगे देखकर मैं सोचता हूं कि दुनिया अवचेतना की अवस्था मे सहजे ही दैनिक कार्यों की आदी हो गई है। गुरु नानक सचेत चेतना की अवस्था में जाने के आरज़ूमंद हैं।

सुपनै आइआ भी गइआ मै जलु भरिआ रोइ ॥
आइ न सका तुझ कनि पिआरे भेजि न सका कोइ ॥
आउ सभागी नीदड़ीए मतु सहु देखा सोइ ॥
(राग वढहंस, गुरु नानक)

सपने में मेरा असली रूप आया और गायब हो गया। मैं ज़ार-ज़ार रोया।
मेरे प्यारे, ना मुझे कोई बोध हो रहा है और ना मैं किसी को प्रेरना दे सकता हूं।
आ मेरी शुभ नींद, शायद मैं अपने असली आप को फिर से देख सकूं।
(राग वढहंस, गुरु नानक)

गुरु नानक और भाई मरदाना ने पुष्कर से मथुरा का सफ़र किया।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर चलते हुये अब हम मथुरा जा रहे हैं।

मथुरा शहर इंडिया के राज्य उत्तर प्रदेश में यमुना नदी के तट पर बसा है। यह हिंदू मज़हब के 'सप्तपुरी' में शामिल है जिसके तहत सात शहरों को पवित्र माना जाता है। मथुरा भगवान कृष्ण की जन्मभूमि है।

मज़हबी महत्व का स्थान होने के कारण मथुरा में रूहानियत के आरज़ूमंद एकत्रित होते थे। इन लोगों के साथ गोष्ट करने के लिये गुरु नानक इस शहर में आये थे।

'मिहरबान जन्मसाखी' में दर्ज है कि गुरु नानक और भाई मरदाना, मथुरा में अपने क़ियाम के दौरान केशव देव मंदिर गये जो भगवान कृष्ण के जन्म को समर्पित है।

हम कृष्ण जन्मस्थान मंदिर जा रहे हैं जो उन्नीस सौ तिरेपन में बनाया गया था। पहले इस स्थान पर केशव देव मंदिर होता था।

भगवान कृष्ण के महाकाव्य महाभारत में दिये गये 'गीता सार' का निचोड़ मोह का त्याग करना था। विवेक को समझने के लिये इसके तत्वों को रूपकों के रूप में समझना पड़ता है। पांच पांडव भाई शरीर की पांच ज्ञान इंद्रियों की नुमाइंदगी करते हैं जो अनुभव, अध्ययन, सुनने, सोचने और गोष्ट में मदद करते हैं। यह पूरी तरकीब उनकी हमराही 'द्रौपदी' की हिमायत से पूर्ण होती है जो यकीन की नुमाइंदगी करती है। उनके विरोधी सौ कौरव भाई, मन पर भारी पड़ने वाले अज्ञान के विभिन्न रूपों की नुमाइंदगी करते हैं। युद्ध के मैदान में कृष्ण रथवान के रूप में पांच घोड़ों वाला रथ हांकते हैं जो मानव बुद्धि के पांच तत्वों की नुमाइंदगी करता है। कृष्ण स्वयं ज्ञाता, हाज़रा-हज़ूर और मानवीय समझ-बूझ की नुमाइंदगी करते हैं जो रूहानी विजय में सहाई होते हैं।

फ़लसफ़े की गहराई को खोजते और समझते हुये, महाकाव्य मानवीय फितरत के बारे इल्म की समझ पैदा करते हैं। इसके बिना तो यह संकेत मज़हबी ग्रंथों तक ही सीमित रह जाते हैं।

केतीआ कंन्न कहाणीआ केते बेद बीचार ॥
(राग आसा, गुरु नानक)

बहुत सारी रूहानी कहानियां हैं और ग्रंथों के बारे बहुत सारे विचार हैं।
(राग आसा, गुरु नानक)

आदिकाल से सभी मज़हबों के बुनियादी फ़लसफ़े एक ही गहरा संदेश देते हैं। समय के साथ इनका नया व्याख्यान होता रहता है। गुरु नानक ने याद दिलाया कि कई ग्रंथ हैं, अनेक वाद-विवाद और कई व्याख्यान हैं। पर विवेक सिर्फ शब्दों से ही हासिल नहीं किया जा सकता।

केशव देव मंदिर में गोष्ट के दौरान वैष्णव मत के ज़िआरतियों ने गुरु नानक से सवाल किया कि निरंकार के साथ जुड़ने के लिये कौन सी सेवा की दरकार है और कौन सा नियम है। जवाब में गुरु नानक ने गाया,

सहज मिलै मिलिआ परवाण ॥
ना तिस मरण न आवण जाण ॥
ठाकुर महि दास दास महि सोइ ॥
जह देखा तह अवर न कोइ ॥१॥
गुरमुख भगत सहज घर पाईऐ ॥
बिन गुर भेटे मर आईऐ जाईऐ ॥
(राग धनासरी, गुरु नानक)

जो मेल सहज ही होता है वह स्वीकार्य है।
इसमें आने-जाने का कष्ट नहीं है।
ठाकुर दास हैं और दास ठाकुर हैं।
मैं जहां भी देखता हूं तो उस एक के बिना कुछ नज़र नहीं आता।
आत्म-पड़चोल और सहज से बंधे हुये मनुष्य को अपना ठिकाना नसीब होता है।
विवेक से जुड़े बिना मनुष्य रूहानी रूप से मुर्दा है और सोच के भंवर में फंसा रहता है।
(राग धनासरी, गुरु नानक)

ख़बरदारी के साथ मनुष्य अपने कार्यों से बाख़बर रहता है और सहजता, अमलों में चौकसी के साथ तवाज़न कायम करने का कार्य है। हम बहुत दब्बू हो सकते हैं और इंसाफ़ के लिये आवश्यक साहस हार सकते हैं या अधिक कठोर हो सकते हैं और हमदिली की भावना में शून्य हो सकते हैं। गुरु नानक ने फ़रमाया कि सहज का अर्थ ख़बरदारी, दृढ़ता, वैश्विक प्रेम और कुदरत के नियमों को मानने वाली एक्जुड़ता है। यह सृजनहारे के साथ एक होने का कारगर रास्ता है।

हम मथुरा के गुरुद्वारा नानक बग़ीची जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: गुरु नानक के वैष्णव मत के ज़िआरतियों के साथ गोष्ट की याद में केशव देव मंदिर के पास गुरुद्वारा नानक बग़ीची बनाया गया है।

हम यमुना नदी के घाटों पर जा रहे हैं। ऐतिहासिक तौर पर हिंदू तीर्थयात्री इन घाटों पर इस उम्मीद में डुबकी लगाने आते हैं कि इससे उनके पाप धुल जायेंगे।

इन घाटों पर शैव मत के कुछ मथुरा वासी अनुयायियों ने गुरु नानक से उनके सामाजिक रुतबे के बारे में पूछा था। उन्होंने सवाल किया कि उनका महज़बी रहबर कौन है। जवाब में, गुरु नानक ने गाया,

अपुने ठाकुर की हउ चेरी ॥
चरन गहे जगजीवन प्रभ के हउमै मारि निबेरी ॥
(राग सारंग, गुरु नानक)

मैं अपने ठाकुर की दासी हूं।
मैं ज़िंदगी देने वाले प्रभु के चरणों में विराजमान हूं अपने अहंकार को मार कर।
(राग सारंग, गुरु नानक)

गुरु नानक ने कहा कि दूसरों की सेवा उनका सामाजिक रुतबा है। नम्रता से उन्होंने अपने-आप को दासी के बराबर बताया जो हाज़रा-हज़ूर की सेवा में स्वयं को कुर्बान कर देती है। उन्होंने दावा किया कि उनका मज़हबी रहबर विवेक हैं जिससे अहंकार का ख़ात्मा होता है।

ग़ुलामी को आमतौर पर बंदी बनाने से जोड़ा जाता है। दुर्भाग्य से हम मन की ग़ुलामी को नज़रअंदाज कर देते हैं जो पहचान और लालसाओं के मोह में फंसा हुआ है।

हम अब यमुना नदी के किनारे एक स्थान पर जा रहे हैं जिसे उदासीन बिरादरी ने बनवाया था।

अमरदीप सिंह: गऊ घाट पर बना 'उदासीन मठ' गुरु नानक के मथुरा आने की याद में सबसे पुराना स्थान है।

एक स्थानीय निवासी ने ज़िक्र किया कि उन्नीस सौ अस्सी के सियासी वाक्यात से पहले इस स्थान पर गुरु ग्रंथ साहिब विराजमान थे। इस वक्त में गुरु नानक की आराधना उदासीन बिरादरी के साथ उनके पुरानी सांझ के हवाले से की जाती है।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने मथुरा से दिल्ली का सफ़र किया।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर चलते हुये अब हम दिल्ली जा रहे हैं।

यमुना नदी के तट पर आबाद दिल्ली, इंडिया की राजधानी है। छठी शताब्दी से बसे इस शहर के नाम के बारे में कई कहानियां प्रचलित हैं। कुछ इतिहासकारों का कहना है कि यह नाम 'दिल' शब्द से बना है और कुछ का मानना है कि यह 'दहलीज़' शब्द से बना है जिसका इशारा गंगा के मैदानी इलाके के द्वार की तरफ होता है।

अमरदीप सिंह: इंडिया की राजधानी दिल्ली कई राजाओं की गवाह है क्योंकि यह सदियों से हुक्मरानी का केंद्र रही है।

जब गुरु नानक दिल्ली आये तो यहां अफ़ग़ान बादशाह सिकंदर लोधी का राज था।

हम यमुना के किनारे उस इलाके में जा रहे हैं जो इतिहास में 'मजनू का टीला' के नाम से दर्ज है। यह नाम ईरानी सूफ़ी संत फ़कीर अब्दुल्ला से आया है, जिन्हें मजनू के नाम से भी जाना जाता है, वह जो अपने प्यारे के प्यार में खोया है।

अमरदीप सिंह: गुरुद्वारा 'मजनू का टीला' उस स्थान पर बना है जहां गुरु नानक और सूफ़ी फ़कीर में गोष्ट हुई थी।

इतिहास में दर्ज है कि दिल्ली साम्राज्य के बादशाह सिकंदर लोधी दोहरे विचारों वाला व्यक्ति था। वह ख़ैरात देने में दयालु था लेकिन दूसरे मज़हबों को बर्दाश्त नहीं करता था। 'मिहरबान जन्मसाखी' में दर्ज है कि फ़कीर अब्दुल्ला और रूहानियत के अन्य आरज़ूमंदों के साथ गोष्ट के दौरान गुरु नानक से ख़ैरात के महत्व पर राय

मांगी गई थी। उनसे पूछा गया था कि क्या बड़ी मात्रा में ख़ैरात देने से व्यक्ति सज्जन बन जाता है। जवाब में, गुरु नानक ने गाया,

अंधी कंमी अंध मन मन अंधै तन अंध ॥
चिकड़ लाइऐ किआ थीऐ जाँ तुटै पथर बंध ॥
बंध तुटा बेड़ी नही ना तुलहा ना हाथ ॥
नानक सचे नाम विण केते डुबे साथ ॥
(राग मलार, गुरु नानक)

आंख बंद करके किये गये कर्मों से मन अंधा हो जाता है। अंधा मन शरीर को भी अंधा कर देता है।
मिट्टी का बांध बनाने का क्या फायदा जबकी बांध तो पत्थरों का भी टूट जाता है?
बांध टूट गया। अब ना कोई नाव है ना कोई बेड़ा और ना कोई चप्पू।
नानक ने फ़रमाया कि सच्ची सोच-विचार के बग़ैर अनेक डूब गये हैं।
(राग मलार, गुरु नानक)

यह ग़लतफ़हमी है कि ख़ैरात देने से नाइंसाफ़ी नज़रअंदाज़ हो सकती है। गुरु नानक ने फ़रमाया कि नाइंसाफ़ी करने वालों के अच्छे कर्म सिर्फ एक कच्चे बांध की तरह होते हैं जो बाढ़ का सामना नहीं कर सकते।

इस फ़लसफ़ी संदेश का ज़िक्र 'वलायतवाली जन्मसाखी' और 'भाई मनी सिंह जन्मसाखी' में नहीं है। इन जन्मसाखियों में एक चमत्कार का उल्लेख मिलता है जिसमें गुरु नानक ने दिल्ली की यात्रा के दौरान एक मरे हुये हाथी को पुनर्र्जीवित किया था। वृतांत में इस तरह का अंतर देखकर मुझे आश्चर्य होता है कि क्या समय के साथ हम गुरु नानक के रूहानी शबदों, समरूपतायों और रूपकों से दूर हो गये हैं।

इहु मन मैगल कहा बसीअले कहा बसै इहु पवना ॥
कहा बसै सु सबद अउधू ता कउ चूकै मन का भवना ॥
(राग रामकाली, गुरु नानक)

हाथी की तरह व्यवहार करने वाला मन कहां बसता है? सांसो का वासा कहां है?
वह विवेक कहां वास करता है जो नकारात्मक सोच से छुटकारा और मन को भटकन से मुक्ति देता है।
(राग रामकाली, गुरु नानक)

हाथियों की याददाश्त तेज़ होती है जो सोच-विचार वाले मन के माध्यम से बुद्धि के विकास में मदद करती है। गुर नानक ने फ़रमाया कि जब हाथी के रुपी गुण मनुष्य में शून्य हो जाते हैं, तो इन गुणों को आलोचनात्मक सोच के साथ पुनर्जीवित किया जा सकता है। आलोचनात्मक सोच मानवी मन का विकसित रूप है। मेरी विनम्र राय में, हाथी को पुनर्जीवित करने की कहानी इस फ़लसफ़ी संदेश की रूपक के तौर पर प्रस्तुति है।

'मजनू का टीला' से आठ किलोमीटर के फासले पर गुरुद्वारा नानक प्याऊ है, जो दिल्ली में गुरु नानक को समर्पित एक और जगह है। नामवर लेखक काहन सिंह नाभा ने महान कोष में लिखा है कि गुरु नानक ने इस स्थान पर पानी पिला कर यात्रियों की प्यास बुझाई थी। मेरी विनम्र राय में, यह कुआँ विवेक के ख़ज़ाने का रूपक के तौर पर नुमाइंदगी करता है। गुरु नानक ने लोगों की रूहानी प्यास बुझाने के लिये यह मार्गदर्शन दिया।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने दिल्ली के पश्चिम की ओर पानीपत का सफ़र किया।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर चलते हुये अब हम पानीपत जा रहे हैं।

इंडिया के राज्य हरियाणा में पानीपत ऐतिहासिक शहर है। महाकाव्य महाभारत के अनुसार, शहर की स्थापना पांडव भाइयों ने की थी। यह शहर अपने बुनकरों के लिये प्रसिद्ध है और मुख्य राजमार्ग पर स्थित होने के कारण रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है। यह तीसरी शताब्दी के व्यापार और यात्रा मार्ग पर पड़ता है जो उपमहाद्वीप और मध्य एशिया को जोड़ता है।

हम पानीपत में बू अली कलंदर शेख़ शरफ़ू-उद-दीन की दरगाह पर जा रहे हैं जो चौदहवीं शताब्दी के मुस्लिम संत थे और शाह शरफ़ के नाम से लोकप्रिय थे।

मैं हूँ किस्मत का सिकंदर ॥
वरना कतरे से समुंदर ॥
मैं अली का हूँ कलंदर ॥
जपूँ हर दम अली मौला ॥
रटूँ हर दम अली मौला ॥
हृदय हर दम अली मौला ॥

है मेरी साँस के अंदर ॥
मैं अली का हूँ कलंदर ॥

मैं किस्मत का सिकंदर हूं।
नहीं तो मैं समुंद्र में एक कतरे की तरह होता।
मैं अली का कलंदर हूं।
हर दम मैं अली मौला का जाप करता हूं।
मुझे अली मौला का नाम हमेशा याद रहता है।
मेरा दिल हर दम अली मौला से जुड़ा रहता है।
ली मेरी हर सांस में हैं।
मैं अली का कलंदर हूं।

पानीपत में अपने क़ियाम के दौरान गुरु नानक और भाई मरदाना शाह शरफ़ की दरगाह पर गये जहां रूहानियत के राही सूफ़ियों की संगत जुड़ती थी।

शेख़ ताहिर को शेख़ ईदुल कबीर के नाम से भी जाना जाता है लेकिन 'जन्मसाखी' साहित्य में उनका उल्लेख शेख़ तातिहार के रूप में किया गया है। गुरु नानक और भाई मरदाना को गहरे विवेक वाले सबदों का गायन करता सुनकर शेख़ ताहिर ने मज़ार में उनका स्वागत किया।

अमरदीप सिंह: गुरु नानक और भाई मरदाना ने शेख़ ताहिर से गोष्ट किया जो उस समय पानीपत में बू अली शाह कलंदर के मज़ार के रूहानी रहबर थे।

इस गोष्ट के दौरान श्रदालुओं ने गुरु नानक से एक ईमानदार व्यक्ति के गुणों के बारे में पूछा। जवाब में गुरु नानक ने गाया,

सिदक कर सिजदा मन कर मखसूद ॥
जिह धिर देखा तिह धिर मउजूद ॥
(सिरी राग, गुरु नानक)

अपने सिदक को सजदा बनाओ और मन को जीत लेना ही ज़िंदगी का मकसद बनाओ।

मुझे हर जगह एक ही सृजनहार नज़र आता है। मुझे हर जगह एक ही सृजनहार नज़र आता है।
(सिरी राग, गुरु नानक)

गुरु नानक ने फ़रमाया कि सदाचारी व्यक्ति की दृष्टि मज़हबों के शिष्टाचार से कहीं बड़ी होती है। उनके लिये, 'सजदा' का अर्थ विनम्र होना और अपने ज्ञान के अहंकार को चढ़ावे के तौर पर चढ़ा देना है जिससे सब को एक देखने वाली नज़र की बख़्शिश होती है।

सूफ़ी एजाज़ अहमद हाशमी: नानक साहिब एक संदेश लेकर निकले थे। लोगों को जगह-जगह प्यार और भाईचारे का संदेश दिया। बड़ों का सम्मान करें। छोटों से मुहब्बत करो। ग़रीबों से मुहब्बत करो। जिसका भगवान, ख़ुदा से संपर्क हो जाता है, उसके भीतर से भेदभाव ख़त्म हो जाता है। वह सभी को सम्मान की दृष्टि से देखता है। सबको गले लगाता है। नानक साहिब भी कलंदरी सिलसिले में आते हैं। कलंदर ज़्यादा लोगों को अपने पास नहीं रखता। वह तन्हाई-पसंद होता है।

मस्त कलंदर, मस्त कलंदर, मस्त कलंदर, हक।
अली का पहला नंबर।
लालों का लाल कलंदर।
दादा हयात कलंदर।
राबिया बसरी कलंदर।
शाह शरफुद्दीन कलंदर।
हुसैनी लाल कलंदर।
बू अली शाह कलंदर।
दमा दम मस्त कलंदर।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने पानीपत से पंजाब के तख़तूपुरा का सफ़र किया।

हम पंजाब के तख़तूपुरा गांव जा रहे हैं जहां गुरु नानक के आगमन की याद में गुरुद्वारा बनाया गया है।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने तख़तूपुरा से सतलुज नदी को पार किया और सुल्तानपुर लोधी का सफ़र किया।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर चलते हुये अब हम सुल्तानपुर लोधी की ओर बढ़ रहे हैं।

वर्षों बाद गुरु नानक के रूहानी नूर से सुशोभित चेहरे को देखकर बेबे नानकी आनंदित हो गई। सुल्तानपुर लोधी के लोग गुरु नानक से मिलने को उतावले थे, जिन्होंने शहर के मोदीखाना में 'मोदी' के रूप में काम किया था। लोग उनके विभिन्न संस्कृतियों और मज़हबों के लोगों के साथ घुलने-मिलने वाली उनकी यात्रा और अनुभवों के बारे में सुनने के लिये उत्सुक थे। लोगों ने सोचा कि गुरु नानक को इबादत स्थानों पर दिव्य अनुभूति हुई होगी इसलिये वे उस दृश्य और उस भावना की विशेषताओं के बारे में पूछ रहे थे। उनके सवालों को संबोधित करते हुए गुरु नानक ने गाया,

जे किहु होइ त किहु दिसै जापै रूप न जात ॥
सभ कारण करता करे घट अउघट घट थाप ॥
आखण अउखा नानका आख न जापै आख ॥
(राग सारंग, गुरु नानक)

यदि वह कोई हो तो दिखाई दे। उसका रूप और रुतबा दिखाई नहीं देता।
कर्ता स्वयं सब कुछ करता है। हर ऊँचे-नीचे के हृदय में उसका वास है।
नानक फ़रमाते हैं इसका वर्णन करना कठिन है। उसे शब्दों में वर्णित नहीं किया जा सकता।
(राग सारंग, गुरु नानक)

मनुष्य की धारणा है कि पदार्थ, मन और चेतना एक-दूसरे से भिन्न हैं। गुरु नानक ने ज़ोर देकर कहा कि निर्गुण और सरगुन, नाज़र और हाज़िर आपस में जुड़े हुये हैं जिसका अर्थ है कि सृजनहार निरंकार है और वह सर्वव्यापक शक्तिमान है। वह हाज़िर है लेकिन अथाह है। मनुष्य अपने कर्मों से ही इलाही को हासिल करता है या उससे दूर हो जाता है।

सुल्तानपुर लोधी से हम गुरु नानक के पदचिन्हों से कुछ घुमाव लेकर सोहल ठठी जा रहे हैं ताकि हम भगत सैन की यादों से जुड़ सकें। भगत सैन का फ़लसफ़ा गुरु नानक से मिलता है।

भगत सैन के जन्म के बारे में कई किस्से प्रचलित हैं। सबसे लोकप्रिय मान्यता यह है कि भगत सैन का जन्म तेरह सौ नब्बे में सोहल ठठी गांव में एक नाई परिवार में हुआ था जिसे निचली जाति माना जाता है।

भगत सैन निस्वार्थ सेवा के प्रतिमूर्ति थे। वह दिन भर एक निजी सहायक के रूप में राजा की नोकरी करते थे और रात में रूहानी झुकाव वाले और ज़रुरतमंदों की सेवा करते थे।

भगत सैन का समय गुरु नानक से बहुत पहले का है। हालांकि वे एक-दूसरे के साथ नहीं मिले लेकिन उनके विचार मिलते हैं। दोनों अद्वैतवाद के हिमायती थे। दोनों निस्वार्थ सेवा के समर्थक थे और जाति व्यवस्था को रद्द करते थे। भगत सैन का एक शबद गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज है। इस शबद में वह भक्तिमय गर्मजोशी और सर्वशक्तिमान पालनहार के प्रति कृतज्ञता का इज़हार करते हैं,

मंगला हरि मंगला ॥ नित मंगल राजा राम राइ को ॥
मदन मूरत भै तार गोबिंदे ॥ सैन भणै भज परमानंदे ॥
(राग धनासरी, भगत सैन)

अनन्त मंगला परम बख्शीश है। हर रोज़ सृजनहार का मंगला गाया जाता है।
मेरे निर्भय मदन मूरत ने सांसारिक समंदर से पार करवाया है। सैन फ़रमाते हैं कि परम आनंद के बारे में सोच-विचार करो। अनन्त मंगला गाना परम बख्शीश है।
(राग धनासरी, भगत सैन)

भगत सैन को निस्वार्थ सेवा से परम आनंद मिलता है जो उनके लिये सृजनहार की इबादत है।

गुरु नानक और भाई मरदाना सुल्तानपुर लोधी से उत्तर पश्चिम का सफ़र करते हुये, ब्यास नदी को पार कर पट्टी पहुंचे।

सोहल ठठी से घुमाव लेने के बाद हम वापिस मुड़कर गुरु नानक के पदचिन्हों पर चलते हुये सुल्तानपुर लोधी से पट्टी जा रहे हैं।

पट्टी माझा का ऐतिहासिक शहर है, जो अब इंडिया के पंजाब राज्य में इंडिया-पाकिस्तान सीमा के पास है। यह कभी हुक्मरानी और ख़ुशहाली का केंद्र था। सातवीं शताब्दी के चीनी यात्री ह्यून सांग ने इस शहर का उल्लेख किया है।

पट्टी में किसानों को खेतों में हल चलाते हुये देखकर, गुरु नानक ने उनसे पूछा कि वे अपनी रूह की खेती कैसे करते हैं और एक संतोषजनक फ़सल कैसे काटते हैं? एक किसान ने गुरु नानक से मार्गदर्शन करने की गुज़ारिश की। जवाब में, गुरु नानक ने गाया,

इहु तन धरती बीज करमा करो सलिल आपाउ सारिंगपाणी ॥
मन किरसाण हरि रिदै जंमाइ लै इउ पावसि पद निरबाणी ॥
काहे गरबस मूड़े माइआ ॥
पित सुतो सगल कालत्र माता तेरे होहि न अंत सखाइआ ॥
(सिरी राग, गुरु नानक)

इस तन की भूमि में अच्छे कर्मों का बीज डालो। हाज़रा-हज़ूर की सोच-विचार से सिंचाई करें।
अपने मन को एकता उगाने वाला किसान बनाओ। इसी राह पर चल कर मुक्ति हासिल की जा सकती है।
हे अज्ञानी, तुम्हें अपने माल-असबाब पर इतना अभिमान क्यों है?
माता-पिता, बच्चे, पत्नी और रिश्तेदार अंतिम समय में सहाय नहीं होंगे।
(सिरी राग, गुरु नानक)

फ़सल उगाने की तरकीब रूहानियत के रास्ते पर चलने के समान है। भरपूर खेती करने में यकीन रखने वाला किसान ज़मीन में गहरी जुताई करता है, समझ से बीज डालता है और करुणा के साथ फ़सल पालता है। गुरु नानक, लोगों को इस सोच को अपनाने के लिये प्रेरित करने के लिये कृषि के रूपक का उपयोग करते हैं ताकि लोग एक सार्थक ज़िंदगी जी सकें।

पट्टी से हम गुरु नानक के पदचिन्हों से कुछ घुमाव लेकर इंडिया-पाकिस्तान सीमा के पास बाबा शेख़ ब्रह्म की दरगाह पर जा रहे हैं।

गंजे शक्कर (बाबा फरीद) के लाड़ले,
मेरी बिगड़ी हुई बना दे॥
मैं मर-मर के जिंदा हूँ,
मुझे जीना सिखा दे॥
बाबा फरीद आया, मैं मांगता तेरी गली में॥

गंज-ए-शक़्कर (बाबा फ़रीद) के प्यारे
मेरी बिगड़ी हुई बना दें।
मैं मर-मर कर जी रहा हूं
मुझे जीना सिखा दें।
बाबा फ़रीद, मैं मंगता तेरी गली में आया हूं।

यह मज़ार पीर बाबा शेख़ ब्रह्म का है जो पाकपट्टन में गुरु नानक से मिले थे।

अमरदीप सिंह: बाबा शेख़ ब्रह्म को शेख़ इब्राहिम भी कहा जाता है। वह बाबा शेख़ फ़रीद के रूहानी गद्दी के बारहवें उत्तराधिकारी थे।

गुरु नानक अपनी पहली और तीसरी उदासी के दौरान दो बार पाकपट्टन में बाबा शेख़ फ़रीद के दरबार में गये और दोनों बार बाबा शेख़ ब्रह्म के साथ समय बिताया। इस संबंध से गुरु नानक ने बाबा शेख़ फ़रीद की बाणी एकत्र की जिसे बाद में गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल किया गया। बाबा शेख़ फ़रीद के रूहानी गद्दी के बारहवें उत्तराधिकारी के रूप में पाकपट्टन में ज़िंदगी बिताने के बाद पूर्वी पंजाब में बाबा शेख़ ब्रह्म का निधन हुआ। यह इलाका अब इंडिया में है।

सन उन्नीस सौ सैंतालीस के विभाजन के दौरान रैडक्लिफ रेखा द्वारा दो ऐतिहासिक स्थलों के भाग्य का फ़ैसला किया गया था। गुरु नानक का जन्म और अंतिम विश्राम स्थल पाकिस्तान का हिस्सा बन गया और शेख़ ब्रह्म की दरगाह इंडिया में आ गई। इस प्रकार दोनों मज़हबों के अधिकांश अनुयायी अपने निवास स्थान के अनुसार किसी ना किसी महबूब रहबर के स्थान तक पहुंच से वंचित रह गये। सिख और हिंदू बिरादरी मूल रूप से बाबा शेख ब्रह्म की कब्र की देखभाल करते हैं। यह स्थान सीमा पर बेआबाद इलाके में स्थित है। यह सप्ताह में एक दिन खुलता है और केवल भारतीय नागरिकों को ही यहां आने की अनुमति है। पाकिस्तानी तीर्थयात्रियों को पाकिस्तानी रेंजर्स के माध्यम से भारतीय सीमा सुरक्षा बल को अपना प्रसाद देते हुये देखना जज़्बाती कर देता है, जो दरगाह पर चढ़ता है।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने पट्टी से घविंडी का सफ़र किया।

मौजूदा दौर में सियासी कारणों से इंडिया-पाकिस्तान सीमा को कुछ निश्चित चौकियों से ही पार किया जा सकता है। इसलिये हम वाघा नाका से पाकिस्तान जा रहे हैं और घविंडी से गुरु नानक के पदचिन्हों पर अपनी यात्रा जारी रखेंगे।

घविंडी में हम गुरुद्वारे के बचे हुये एकमात्र गुंबद को देखने जा रहे हैं। कहा जाता है कि इस गुरुद्वारे का निर्माण गुरु नानक की इस इलाके की यात्रा की याद में किया गया था।

तारा सिंह निरोतम ने अट्ठारह सौ चौरासी में अपनी पुस्तक 'गुरू तीरथ संग्रह' में घविंडी के ऐतिहासिक गुरुद्वारे का उल्लेख किया है।

सन उन्नीस सौ सैंतालीस के विभाजन ने भारतीय उपमहाद्वीप को दो स्वतंत्र मुल्कों, इंडिया और पाकिस्तान में विभाजित कर दिया। मज़हबी आधार पर विभाजन के कारण पाकिस्तान में गुरु नानक के अनुयायियों की संख्या कम हो गई, जिसके परिणामस्वरूप गुरु नानक की स्मृति में बने कई स्थान समय के साथ उजाड़ हो गये।

घविंडी गांव के एक बुजुर्ग निवासी ने हमें बताया कि पहले गुरूद्वारे की इमारत के पास सरोवर था। अब वह सरोवर सूख गया है और इस ज़मीन पर खेती होती है।

घविंडी से गुरु नानक और भाई मरदाना जाहमन गांव से गुज़रे।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर चलते हुये अब हम इंडिया-पाकिस्तान सीमा के पास जाहमन गांव में गुरुद्वारा रोडी साहिब जा रहे हैं।

भाई वधावा सिंह ने जाहमण गांव में इस गुरुद्वारे को बनवाया था।

काहन सिंह नाभा 'महान कोष' में लिखते हैं कि जब गुरु नानक और भाई मरदाना जाहमण गांव आये, तो उन्होंने भांबरा जैन बिरादरी के भाई नारिया के साथ रूहानी गोष्ट किया था। गुरु नानक के फ़लसफ़े के मतवाले हो कर, भांबरा बिरादरी के कई सदस्य उनके अनुयायी बन गये थे।

जाहमण के गुरुद्वारा रोड़ी साहिब के पास उन्नीस सौ सैंतालीस के बंटवारे से पहले ज़मीन के बड़े हिस्से का मालिकाना था और संगत का यहां आना-जाना लगा रहता था। यहां साल में दो बार मेला लगता था। अब यह गुरुद्वारा वीरान हो गया है, इसका विशाल सरोवर सूख गया है। इस गुरुद्वारे की शानो-शौकत वाली पृष्ठभूमि का अंदाज़ा उन खंडहरों से लगाया जा सकता है जहां दीवारों पर प्रेरक नैतिक लोककथाओं की चित्रकारी आज भी देखी जा सकती हैं।

यह दिलचस्प है कि इस गुरुद्वारे का नाम रोडी साहिब है जो अैमनाबाद के गुरुद्वारे का नाम भी है।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने जाहमण गांव से बरकी ज़िले के डेरा चाहल गांव का सफ़र किया।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर चलते हुये अब हम गांव डेरा चाहल के डेरा चाहल गुरुद्वारा जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: डेरा चाहल गांव में गुरु नानक का ननिहाल था। इसी गांव में गुरु नानक की बहन बेबे नानकी का जन्म हुआ था। यह गुरुद्वारा गुरु नानक के आगमन और बेबे नानकी के जन्म की याद में बनाया गया था।

कहा जाता है कि बचपन में गुरु नानक अक्सर अपने ननिहाल जाते थे।

उन्नीस सौ संतालीस के विभाजन के बाद यह गुरुद्वारा वीरान हो गया था। इसकी मुरम्मत और सेवा संभाल का काम पाकिस्तान के कार्यकारी तत्कालीन प्रधान मंत्री मलिक मेराज ख़ालिद की पहल पर उन्नीस सौ सत्तानवे में शुरू हुआ। वह खुद इसी गांव के रहने वाले थे।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने डेरा चाहल से तलवंडी की यात्रा की, जिसे बाद में ननकाना साहिब नाम दिया गया।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर चलते हुये अब हम डेरा चाहल से ननकाना साहिब जा रहे हैं।

गुरु नानक और भाई मरदाना लगभग बारह साल के सफ़र के बाद तलवंडी लौट रहे थे। उनकी 'पहली उदासी' पूर्व और दक्षिण की ओर थी जो पंद्रह सौ चार ईस्वी में शुरू हुई और अंदाज़न पंद्रह सौ सौलह ईस्वी में पूर्ण हुई जब गुरु नानक की उम्र सैंतालीस साल थी।

भाई मरदाना अपने परिवार से मिलने गये और गुरु नानक अपने परिवार से मिले जो उनकी उपलब्धियों के बारे में सुनकर बहुत खुश हुये।

तलवंडी में कुछ समय बिताने के बाद, गुरु नानक ने अपनी अगली उदासी पर जाने की योजना बनानी शुरू कर दी जो उत्तर की ओर थी। भाई मरदाना ने अपने सच्चे साथी के रूप में सहमति दी कि वह गुरु नानक की संसारिक और रूहानी उदासियों में शरीक रहेंगे।

हम वास्तविकता को अपनी समझ के अनुसार देखते हैं और यही हमारे कार्यों पर असरअंदाज़ होता है। गुरु नानक ने कहा था कि अगर हम खुद को जीत लेते हैं तो हम पूरी दुनिया को जीत सकते हैं।

आई पंथी सगल जमाती मन जीतै जग जीत ॥
(जप, गुरु नानक)

मानवता को अपनी पंथक और विवेक वाली जमात समझो। अगर तुमने मन जीत लिया तो सारी दुनिया जीत ली।
(जप, गुरु नानक)

चर्चा के लिए कुछ संकेतक

रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड १७: प्रवास (क़ियाम)

चर्चा के संकेतक गुरु नानक की ऐतिहासिक यात्रा और गहन दार्शनिक विरासत में गहराई से प्रवेश करने के लिए एक प्रभावशाली ढांचा प्रस्तुत करते हैं, जिन्हें इस एपिसोड में खोजा गया है। उत्तरी भारत में उनके व्यापक भ्रमण और विभिन्न रुहानी परंपराओं के साथ उनके संपर्क का परीक्षण करके, हम यह जान पाते हैं कि गुरु नानक का अनुभव आधारित ज्ञान किस प्रकार वार्तालाप और विभिन्न धार्मिक समुदायों के साथ संवाद के माध्यम से विकसित हुआ। दार्शनिक प्रश्न गुरु नानक की आत्म-चिंतन, दिव्य समझ, नैतिक कर्म, और रुहानी अभ्यास पर विशिष्ट अंतर्दृष्टियों को उजागर करते हैं, जिन्होंने उनके समय की प्रचलित धार्मिक रूढ़ियों को चुनौती दी। ये प्रश्न विचार को इस ओर प्रेरित करते हैं कि गुरु नानक का दृष्टिकोण केवल कर्मकांडों, जातीय विभाजन और कट्टरता से परे क्यों और कैसे था, और यह कैसे सजगता, संतुलन और सार्वभौमिक प्रेम पर आधारित मार्ग की वकालत करता था। गुरु नानक ने एक ऐसा रुहानी दृष्टिकोण निर्मित किया जो आत्म-नियंत्रण के माध्यम से चेतना के रूपांतरण पर केंद्रित था, न कि बाहरी धार्मिक आडंबरों पर, और यह दृष्टिकोण आज भी विभिन्न सांस्कृतिक और धार्मिक परिदृश्यों में गहराई से प्रासंगिक है। चर्चा संकेतक हमें और अधिक खोज करने की चुनौती देते हैं कि किस प्रकार उनकी बारह वर्षीय परिवर्तनकारी यात्रा (१५०४-१५१६ ई.) ने एक ऐसी दर्शनशास्त्र की नींव रखी जो हमारे समकालीन संसार में प्रभावशाली वार्तालाप और रुहानी अन्वेषण को प्रेरित करती है।

ऐतिहासिक चर्चा संकेतक:

१. गुरु नानक की पहली यात्रा का भौगोलिक दायरा क्या था जैसा कि एपिसोड में वर्णित है?

यह एपिसोड गुरु नानक की चित्तौड़गढ़ से अजमेर, पुष्कर, मथुरा, दिल्ली, पानीपत, तख़तूपुरा, सुल्तानपुर लोधी, पट्टी, घविंडी, जाहमन, डेरा चाहल होते हुए ननकाना साहिब तक की यात्रा को चित्रित करता है। यह पहली यात्रा, जिसे 'पहली उदासी' कहा जाता है, लगभग बारह वर्षों (१५०४ ई. से १५१६ ई.) तक चली और इसने उत्तरी भारत के प्रमुख धार्मिक और सांस्कृतिक केंद्रों को समाहित किया। यह व्यापक यात्रा गुरु नानक की समावेशी दर्शनशास्त्र और विभिन्न आस्थाओं की समझ को कैसे प्रभावित कर सकती है?

२. गुरु नानक ने अपनी यात्रा के दौरान विभिन्न धार्मिक व्यक्तियों के साथ कैसे संवाद किया?

इस एपिसोड में गुरु नानक की विभिन्न रुहानी परंपराओं के अनुयायियों के साथ संवाद का वर्णन है, जिनमें अजमेर में ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के अनुयायी, मथुरा में केशव देव मंदिर पर वैष्णव तीर्थयात्री, यमुना घाट पर शैव भक्त, और पानीपत में सूफी संत शेख ताहिर शामिल हैं। ये विविध वार्तालाप गुरु नानक के अंतर्धार्मिक वार्तालाप और उपदेश देने की बजाय उत्तरदायी वार्तालाप के माध्यम से अपने विचार व्यक्त करने के तरीके के बारे में क्या उजागर करते हैं?

३. गुरु नानक की यात्रा में सूफी संपर्कों का क्या महत्व था?

इस एपिसोड में सूफी परंपराओं के साथ गुरु नानक के सार्थक संपर्कों को उजागर किया गया है, विशेष रूप से अजमेर में ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह पर, दिल्ली में मजनूं का टीला पर फकीर अब्दुल्ला से मुलाकात में, और पानीपत में शेख ताहिर के साथ संवाद में। इसके अतिरिक्त, बाबा शेख ब्रह्म, जो बाबा शेख फरीद के बारहवें उत्तराधिकारी थे, के साथ एक महत्वपूर्ण संबंध का उल्लेख किया गया है, जिसने गुरु ग्रंथ साहिब में शेख फरीद के सबदों को शामिल करने की ओर अग्रसर किया। इन सूफी संपर्कों ने गुरु नानक के रुहानी दृष्टिकोण को किस प्रकार प्रभावित किया और उनके दर्शन को समावेशी बनाने में कैसे योगदान दिया?

४. १९४७ ई. का विभाजन गुरु नानक से जुड़े ऐतिहासिक स्थलों को कैसे प्रभावित करता है?

एपिसोड मार्मिक रूप से दर्शाता है कि भारत और पाकिस्तान के बीच विभाजन करने वाली रैडक्लिफ़ रेखा ने गुरु नानक के जीवन और यात्रा से जुड़े कई स्थलों को दो देशों में बाँट दिया। १९४७ के विभाजन ने भारतीय उपमहाद्वीप को दो संप्रभु राष्ट्रों में विभाजित कर दिया, और धर्म के आधार पर विभाजन ने पाकिस्तान में गुरु नानक के अनुयायियों की संख्या को घटा दिया, जिससे उनकी स्मृति में स्थापित कई स्थलों का क्षय हुआ। घविंडी का गुरुद्वारा, जाहमन का रोड़ी साहिब, और डेरा चाहल जैसे स्थान विभाजन के बाद उपेक्षा का शिकार हुए और कुछ को कई दशकों बाद ही पुनर्स्थापित किया गया। यह राजनीतिक विभाजन गुरु नानक की विरासत की हमारी समझ और संरक्षण को आज किस प्रकार प्रभावित करता है?

५. गुरु नानक का अपने परिवार और मित्रों के साथ कैसा संबंध था?

एपिसोड बताता है कि गुरु नानक ने सुल्तानपुर लोधी में अपनी बहन बेबे नानकी से वर्षों बाद यात्रा के दौरान पुनः भेंट की। इसमें यह भी उल्लेख है कि डेरा चाहल गुरु नानक का ननिहाल था और वे बचपन से ही वहाँ बार-बार जाया करते थे। यात्रा से पहले वे सुल्तानपुर लोधी में एक 'मोदी' (राज्य के भंडारगृह

के अधिकारी) के रूप में कार्यरत थे और यात्रा के दौरान उन्होंने उस नगर का पुनः दौरा किया। ये व्यक्तिगत संबंध और प्रारंभिक जीवन के अनुभव गुरु नानक की रुहानी यात्रा को किस प्रकार प्रभावित करते हैं?

दार्शनिक चर्चा संकेतक:

१. गुरु नानक की प्रार्थना और रुहानी अभ्यास की अवधारणा कर्मकांडीय परंपराओं से कैसे भिन्न है?

जब ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के शिष्यों ने पाँच समय की नमाज़ के इस्लामी कर्तव्य के बारे में प्रश्न किया, तो गुरु नानक ने एक सबद के माध्यम से उत्तर दिया जिसमें यह बताया गया कि सच्चा रुहानी अभ्यास केवल कर्मकांडों से परे होता है। उन्होंने कहा कि भले ही कोई दिन में पाँच बार प्रार्थना करे, ग्रंथ पढ़े और भोजन व पेय में भाग ले, मृत्यु के अटल सत्य के समक्ष ये सभी क्रियाएँ अंततः समाप्त हो जाएँगी। गुरु नानक ने बल दिया कि प्रार्थनाओं को, मन को एक गहन समझ की ओर प्रेरित करना चाहिए, जो जीवन की सांसारिक गतिविधियों से परे हो। केवल कर्मकांडीय पाठ का कोई मूल्य नहीं जब तक कि वह उस एकता की गहरी समझ के साथ न हो जो लिंग, धर्म और सामाजिक स्थिति से परे है। यह दृष्टिकोण विभिन्न परंपराओं की पारंपरिक धार्मिक प्रथाओं को कैसे चुनौती देता है?

२. गुरु नानक की रुहानी शिक्षाओं में दिव्यता की समझ कैसे परिलक्षित होती है?

जब सुल्तानपुर लोधी में दिव्यता के भौतिक स्वरूप के बारे में प्रश्न किया गया, तो गुरु नानक ने एक सबद के माध्यम से उत्तर दिया जिसमें कहा गया कि यदि दिव्यता भौतिक होती, तो वह दृष्टिगोचर होती। उसका स्वरूप और स्थिति ऐसी नहीं है जिसे हम देख सकें। ब्रह्मांडीय शक्ति सभी कार्य करती है और ऊँच-नीच दोनों के हृदय में वास करती है। उसका वर्णन शब्दों में करना सरल नहीं है। फिर भी, गुरु नानक 'निरगुण' (अदृश्य गुणों) और 'सगुण' (दृश्य गुणों) के बीच संबंध पर बल देते हैं। यह अवधारणा इंगित करती है कि दिव्यता मूलतः निराकार है, परंतु उसका रूप सर्वत्र व्याप्त है। यह अद्वैतवादी समझ अन्य धार्मिक ईश्वर अवधारणाओं से कैसे तुलना करती है?

३. गुरु नानक दान और न्याय के संबंध को कैसे संबोधित करते हैं?

जब दिल्ली में यह पूछा गया कि क्या उदारता से दान देना ही सच्चा कुलीनता का चिन्ह है, तो गुरु नानक ने इस धारणा को चुनौती दी। उन्होंने समझाया कि बिना सोच-विचार किए गए कर्म मन को नकारात्मक विचारों से प्रभावित कर सकते हैं और अज्ञानता से युक्त मन किसी की क्षमताओं को बाधित कर सकता है। उन्होंने इस विचार को इस प्रकार चित्रित किया जैसे किसी कमजोर ढांचे को मिट्टी से ढाँकने पर वह

टूट सकता है। यह एपिसोड उस भ्रांति को उजागर करता है कि केवल दान देने से अन्याय की भरपाई की जा सकती है। गुरु नानक ने कहा कि जिनके मन में भेदभाव होता है, उनके तथाकथित पुण्यकर्म उस बाँध के समान हैं जो प्रचंड बाढ़ की ताकत को सहन नहीं कर सकता। यह रुहानी अंतर्दृष्टि समकालीन परोपकारी प्रयासों पर कैसे लागू होती है जो प्रणालीगत अन्याय को अनदेखा कर सकते हैं?

४. गुरु नानक द्वारा कृषि और रुहानी विकास के बीच की तुलना रूपक के रूप में क्या महत्व रखती है?

पट्टी में, जब किसानों ने गुरु नानक से आत्मा की खेती के विषय में मार्गदर्शन माँगा, तो उन्होंने एक गहरा रूपक साझा किया। उन्होंने उन्हें सलाह दी कि वे अपने शरीर को खेत के रूप में देखें जहाँ वे शुभ कर्मों के बीज बो सकते हैं। इन बीजों को सर्वव्यापकता के विचारों से सींचना चाहिए और मन को ऐसे किसान के रूप में कार्य करना चाहिए जो एकता का पोषण करे। ऐसा करके वे मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं। गुरु नानक ने बल दिया कि जिस प्रकार फसल की खेती में समर्पण और आस्था की आवश्यकता होती है, वैसे ही रुहानी यात्रा में भी होती है। एक किसान, अच्छी फसल की आशा में, भूमि को गहराई से खोदता है, बुद्धि के बीज बोता है और करुणा से उन्हें सींचता है। यह दृष्टिकोण दर्शाता है कि अपने भीतर के आत्मा का पालन करना भूमि की देखभाल करने के समान है। यह रूपक धार्मिक सीमाओं से परे रुहानी विकास के लिए एक व्यावहारिक ढांचा कैसे प्रस्तुत करता है?

५. गुरु नानक की 'सहज' की अवधारणा रुहानी साक्षात्कार की दिशा में किस प्रकार का मार्ग प्रदान करती है?

मथुरा में वैष्णव तीर्थयात्रियों द्वारा दिव्य मिलन के उपायों के बारे में पूछे जाने पर, गुरु नानक ने 'सहज' की अवधारणा प्रस्तुत की: वह मिलन जो सहज भाव से प्राप्त होता है। इसके पश्चात पुनर्जन्म का कष्ट नहीं रहता। 'सहज' सजगता, समभाव, सार्वभौमिक प्रेम और प्रकृति के नियम की स्वीकृति का सम्मिलन है, और यह सर्वव्यापक शक्ति के साथ मिलन का एक प्रभावी साधन हो सकता है। यह समग्र रुहानी दृष्टिकोण निर्धारित धार्मिक अभ्यासों से कैसे भिन्न है और आत्म-साक्षात्कार की ओर अधिक समन्वित मार्ग कैसे प्रदान करता है?

६. गुरु नानक के मन पर विजय के संदेश से उनके रुहानी रूपांतरण के दृष्टिकोण के बारे में क्या प्रकट होता है?

एपिसोड गुरु नानक के शक्तिशाली संदेश के साथ समाप्त होता है, जिसमें वे हमें सार्वभौमिक भाईचारे को सर्वोच्च ज्ञान के रूप में देखने के लिए प्रेरित करते हैं। वे बल देते हैं कि यदि हम अपने मन पर विजय प्राप्त कर लें, तो हम संसार पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। यह अंतर्दृष्टि दर्शाती है कि सच्ची रुहानी विजय

बाहरी विजय नहीं, बल्कि आत्म-नियंत्रण के माध्यम से प्राप्त होती है। हमारे मन की समझ हमारी यथार्थ की धारणा को आकार देती है और हमारे कर्मों को प्रभावित करती है। गुरु नानक कहते हैं कि यदि हम स्वयं को जीत लें, तो अंततः हम संसार को भी जीत सकते हैं। यह भीतर केंद्रित रूपांतरण का दृष्टिकोण उन सामाजिक-धार्मिक आंदोलनों से कैसे भिन्न है जो बाहरी परिवर्तन पर बल देते हैं?